रात्रिक्लास 22.3.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बाप पहले ही बताते हैं विघ्न पड़ेंगे। अबलाओं पर अत्याचार होंगे। बाबा आया हुआ है। शिव जयन्ति भी मनाते हैं। पहले–2 तुम समझाते हो बाप शिव ज़रूर स्वर्ग की स्थापना करने आवेंगे। बाप का वर्सा है ही स्वर्ग की बादशाही। तुम समझाते हो शिवबाबा आया हुआ है। और जो भी धर्मों के मनुष्य हैं कोई भी धर्म वाला हो बाप कहते हैं, वह सभी छोड़ दो। निश्चय है बाप आया हुआ है। वह तो आते ही हैं स्वर्ग की स्थापना करने और सभी को वापस ले जाने। बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो। तो मैं मुक्ति–जीवन मुक्ति दाता हूँ। अपना परिचय भी देते हैं। जो भी धर्म वाले हैं बच्चे तो मेरे हैं ना। क्रिश्चयन हो वा कोई भी हो। मैं आया हूँ साथ में ले जाने लिए। फिर कोई प्रश्न ही नहीं उठता। सिर्फ यह निश्चय हो बाप आया हुआ है। सो ज़रूर नई दुनियां की स्थापना करेंगे। बाप है ही कल्याणकारी। बाप आया हुआ है फिर तो कोई प्रश्न ही नहीं उठ सके। यह है श्रीमत। मुझे याद करो तो सतोप्रधान बुद्धि बन जावेंगे। निश्चय बुद्धि विजयन्ति। संशयबुद्धि विनश्यन्ति। बाप सभी कुछ जानते हैं और समझाते हैं। हम कुछ भी नहीं जानते हैं। नेती–2 करते रहते हैं। कुछ भी नहीं जानते हैं। भक्तिमार्ग में कुछ भी नहीं जानते। बाप से मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है। वह पतित–पावन है आपे ही सुनावेंगे। प्रश्न उठना न चाहिए ; परन्तु माया है ना तो अपनी मत निकालते हैं। नहीं तो निकालनी न चाहिए। जो बाबा कहे वही सत्य। जो मनुष्य कहते हैं वह झूठ। प्रश्न न उठना चाहिए। बाप सत्य बोलकर सतयुग की स्थापना करते हैं। सभी का फायदा ही होता है। इसमें मूंझने की दरकार नहीं रहती। 84 जन्म भी भारतवासी के लिए है। और कोई को सुनाते नहीं। वह 84 जन्म थोड़े ही लेते हैं। जिसमें प्रवेश करते हैं वही नम्बरवन। बाप बच्चों को ही सुनाते हैं। फिर बच्चों को औरों को सुनाना है। मैं तो बच्चों को ही सुनाता हूँ। क्रिश्चयन धर्मवाला होगा, मेरे से बादशाही ली न होगी तो मैं उनसे बात क्यों करूँ? वह तुम बच्चों को मेहनत करनी है। तो जो भी आवे उनको बताओ बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। याद में ही सब कुछ भरा हुआ है। सेकण्ड में जीवनमुक्ति गायन है ना। 84 का चक्र भी तुम जानते हो। तुम जानते हो तो तुम ही जीवनमुक्ति पाते हो। बाप आया हुआ है तो समझना चाहिए ना। बाप आये ही हैं ले जाने लिए। सतयुग में तो बहुत थोड़े होते हैं। चित्रों पर समझाना बहुत सहज है। सिर्फ अपन को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो। कोई भी प्रश्न उठता नहीं नहीं। सभी हैं एडीटर। सूरत मनुष्य की ,सीरत बन्दर की है। इस समय सभी तमोप्रधान हैं। आज आया या कल आया जो भी आये सभी हैं पतित। पावन एक भी नहीं। पावन दुनियां में पतित एक भी नहीं। पतित दुनियां में पावन एक भी नहीं। यहां तो हर चीज़ दुःख देने वाली है। इनको कहा जाता है आधा कल्प ज्ञानमार्ग, आधा कल्प भक्तिमार्ग। शास्त्रों में यह बातें हैं नहीं। जो भी शास्त्र पढ़ते हैं है सभी भक्ति। तुमको शास्त्र का नाम नहीं लेना है। जिससे हमारी दुगर्ति हुई उनका नाम क्यों लेवें? बाप कहते हैं शास्त्र भक्तिमार्ग के हैं। उनकी बात न उठाओ। उनमें सब है ईविल। पढ़ते–2 हरेक नीचे ही उतरते हैं। बन्दर से भी बदतर इस समय के मनुष्यों को कहा जाता है। लड़ाई में देखो क्या करते हैं। बच्चों को श्रीमत पर ही चलना है। और कोई बात नहीं। स्वीट बाबा स्वीटेस्ट ही बनाते हैं। यह ज्ञान है ही खास भारतवासियों के लिए। यह है सहज ज्ञान। ... पास जन्म लिया और हकदार बना। तुम विश्व के मालिक बनते हो। सिर्फ याद की यात्रा चाहिए। और कोई तकलीफ नहीं। बाप कहते हैं टॉक नो ईविल। नानसेन्सपने की बात न करो। बाप के आगे यह किसक(ो) बताते हो। ईविल बातें छोड़ो। सभी का फादर है ना। यह टेव पड़ जाती है बाप को याद करने की। बाप (की) याद में शान्ति कर देनी है। उठते–बैठते बाप को याद करो। और कोई भी चीज़ को याद न करो। इन भक्ति(मार्ग के) शास्त्रों से ही तुम्हारी दुगर्ति हुई है। अभी में जो सुनाता हूँ वह सुनो तो सद्गति को पावेंगे। अच्छा, मीठे–मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।